वर्ष-2, अंक-7, जून-अक्टूबर, 2014

सदानीरा

विश्व कविता की पत्रिका

सम्पादक

आग्नेय

सदानीरा

विश्व कविता की पत्रिका

सदानीरा का ई-संस्करण **sadaneera.com** पर उपलब्ध.

एक वर्ष में चार बार प्रकाशित
यह अंक : **जून-अक्टूबर, 2014**
मूल्य - 100 रुपये, वार्षिक 400 रुपये
संस्थाओं के लिए वार्षिक 500 रुपये

वार्षिक शुल्क **सदानीरा** के नाम पर
भोपाल में देय चेक या डिमाण्ड ड्राफ्ट या
मनीऑर्डर से भेजें.

अंक रजिस्टर्ड डाक से.

सम्पादकीय सम्पर्क :

बी-207, चिनार वुडलैण्ड,
कोलार रोड, भोपाल-462016 (म.प्र.)
फ़ोन : 0755-2424126,
मो.- 093031-39295, 094244-10139
ई-मेल- **agneya@hotmail.com**

प्रकाशक :

महेन्द्र गगन
25-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फ़ोन- 0755-2555789
मो.- 094250-11789
ई-मेल- **pahalepahal@gmail.com**

अनुक्रम

सम्पादक की ओर से 05

कविताएँ

खंड-मंड : केदारखण्ड/ **लीलाधर जगूड़ी** 09

ग्रीक कविता : यान्निस रित्सोस

अनुवाद

श्रीकान्त वर्मा 47

विष्णु खरे 52

मंगलेश डबराल 59

विनोद दास 65

विजय कुमार 78

गीत चतुर्वेदी 86

मुक्तिबोध की कविता : चम्बल की घाटी में

कभी अकेले मुक्ति नहीं मिलती/ **सुधीर रंजन सिंह** 89

डायरी

मरीना त्स्वेतायेवा : प्रेम के बारे में/ अनुवाद : **सरिता शर्मा** 96

ओड़िया कविताएँ

रमाकान्त रथ एवं **दुर्गाप्रसाद पंडा**/ अनुवाद : **सुजाता शिवेन** 103

असमिया कविता

रवीन्द्र सरकार/ अनुवाद : **पापोरी गोस्वामी** 130

गुजराती कविता

जयदेव शुक्ल/ अनुवाद : **जेठमल मारू** 138

जर्मन कविता

पॉल सेलान/ अनुवाद : **आग्नेय** 144

चेक कविता

व्लादिमीर होलन/ अनुवाद : **सरिता शर्मा** 151

पोलिश कविता

एडम ज़गायेव्स्की/ अनुवाद : **गीत चतुर्वेदी** 158

अमेरिकी कविता

सिल्विया प्लाथ/ अनुवाद : **आग्नेय** 165

लैंगस्टन ह्यूज़, शरमन पर्ल एवं जो ब्रूचाक/
अनुवाद : **ललित सुरजन** 174

ईरानी/लिथुअनाई कविता

अनाम/जस्टिनास मार्सिंकोविस/ अनुवाद : **ललित सुरजन** 189

भवानीप्रसाद मिश्र

लोक की अँगनाई का गीतफरोश कवि/ **ध्रुव शुक्ल** 195

युवा कविता

राहुल राजेश 200

नीलोत्पल 218

अवदान 227

सदानीरा : यहाँ से लें 229

अनुवाद : रचना का काया-कल्प है

_इज़रा पाउण्ड_ जिनको संसार का सबसे सफल और स्वाभाविक अनुवादक माना जाता है, उनका सोचना है कि कविता का अनुवाद करना कविता लिखने के काम से अलग नहीं है। जिस तरह कवि चीज़ों को देखता है और कविता लिखता है, उसी तरह अनुवादक कविता पढ़ता है और उसका अनुवाद करने के लिए प्रेरित होता है।

संसार में अनेक भाषाएँ और असंख्य शब्द हैं, इसलिए अनुवादक को शब्दों के पीछे छिपे अर्थों, उनकी लय, उनके संगीत और उनके रस को समझने की ज़रूरत होती है। वह अनुवादक के रूप में एक मधुमक्खी बन जाता है, जो न जाने कितने पुष्पों से पराग लेती है और उसको मकरन्द में तब्दील कर देती है। एक ऐसा मकरन्द जो रचयिताओं के दंशों से भरा रहता है। उसे वही चख पाता है, जो सावधानी और एकाग्रता से उस तक पहुँच जाता है। और यह अनुवादक ही होता है जो यह कर पाने में कभी सफल रहता है और कभी विफल रहता है और जब वह सफल रहता है, तब अनुवाद

के माध्यम से किसी रचना का काया-कल्प, उसका कायान्तरण, मूल कृति की तरह कालजयी हो जाता है और जब वह निष्फल होता है, तब वह कृति को जीवाश्म में बदल देता है जिसका भक्षण समय का दीमक कर लेता है।

*प्रख्यात अनुवादक **एडिथ ग्रासमैन** का कथन है कि ''जहाँ साहित्य का अस्तित्व हे, वहाँ अनुवाद का अस्तित्व है। वे नितम्बों से जुड़े हैं, उनको किसी भी तरह अलग नहीं किया जा सकता। एक को जो कुछ होगा, वैसा ही दूसरे को होगा। उन्होंने जो भी कठिनाइयाँ झेली हैं, कभी अकेले और कभी एक साथ। उनको एक दूसरे की ज़रूरत भी है और वे एक-दूसरे को पोषित भी करते हैं। उनका दीर्घ अवधि वाला रिश्ता बहुधा समस्यामूलक होता है, लेकिन वह सदैव प्रदीप्त करने वाला रिश्ता भी है। और यह रिश्ता तब तक बना रहेगा जब तक वे दोनों रहेंगे।''*

मौलिक रचने से अनुवाद करना अधिक दुष्कर कार्य है। भले अनुवादक को मूल भाषा का ज्ञान हो, भले वह व्याकरण में पारंगत हो, अनुवादक का उस भाषा की संस्कृति से, उसकी जातीयता से, उसकी (भाषा की) जलवायु से, उसके भूगोल से कोई आत्मीय और आन्तरिक सम्बन्ध नहीं हो पाता है। वह एक परायी भाषा है, वह विजातीय भाषा है और अनुवादक का कार्य इस भाषा से नाभि-नाल वाला रिश्ता बनाता है। यदि अनुवादक यह रिश्ता नहीं बना पाया तो वह एक असफल और बुरा अनुवादक ही होगा।

*इस समय लेखन (Writing) के सन्दर्भ में अनुवाद वैचारिक विमर्शों में शामिल है। प्रख्यात विचारक **देरिदा** ने अनुवाद की समस्याओं और उसके विरोधाभासों पर विस्तार से विचार किया है। उनके लिए अनुवाद एक Paradox है। उनके इस कथन में कि तुम अवश्य जाओ, मैं नहीं जा सकता, मैं जाऊँगा ही, यह विरोधाभास स्पष्ट दिखाई देता है। वे यह भी कहते हैं कि जो अनुवाद-योग्य है, वह अवश्य अनूदित हो, किन्तु जो अनूदित है, उसका अनुवाद नहीं हो सकता है। गायत्री स्पिवाक अपने एक निबन्ध में 'अनुवाद की राजनीति' का उल्लेख करती हैं।*

***इज़रा पाउण्ड** और **बोर्ख़ेस** ने भी अनुवाद पर अपने विचार व्यक्त किए हैं। पाउण्ड बहुभाषी अनुवादक थे। उनको संसार की अनेक भाषाओं का ज्ञान था। उनके लिए अनुवाद करना सारतत्त्व में किसी अन्य काव्यात्मक कार्य से भिन्न नहीं था। उनका कहना था कि जैसे कवि देखने से प्रारम्भ करता है, अनुवादक पढ़ने से आरम्भ करता है; लेकिन उसका पठन, एक तरह का देखना होता है। उसे रचना के बीज को पढ़ना चाहिए, उसकी टहनियों को नहीं गिनना चाहिए।*

***वाल्टर बेन्यामिन** की किताब Illuminations में अनुवाद पर उनका एक लेख है, जिसका शीर्षक है- The Task of the Translator. इस लेख में उन्होंने अनुवाद की गहन मीमांसा की है। यह लिखते हुए कि कोई भी कविता पाठक के लिए*